Toppersnotes®
Unleash the topper in you

SSC - GD

CONSTABLE

STAFF SELECTION COMMISSION

भाग - 5 (ब)

सामान्य हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्ण विचार	1
2	संज्ञा	5
3	सर्वनाम	7
4	विशेषण	8
5	वाच्य	9
6	कारक	11
7	विराम चिन्ह	14
8	संधि	17
9	समास	32
10	लिंग	38
11	वचन	42
12	उपसर्ग	43
13	प्रत्यय	52
14	शब्द युग्म	60
15	देशज शब्द	69
16	तत्सम – तद्भव शब्द	73
17	अव्यय – अविकारी शब्द	75
18	वर्तनी शुद्धि	78
19	वाक्य विचार	92
20	वाक्य के लिए एक शब्द	99
21	विलोम शब्द	105
22	अनेकार्थक शब्द	111
23	मुहावरे	114

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	लोकोक्तियाँ	120

1 CHAPTER वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं ।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना।
- भाशा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह् अ म् अ) है ।

लिपि –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विषेशताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के षुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता।
किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है।
जैसे :– क्, च्, ट् अ, इ, उ
वर्ण के भेद :– 2 प्रकार है।
(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :– स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है। हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।
जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :– मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार है ।

(i) ह्रस्व स्वर – जिनके उच्चारण मे एक मात्रा का समय लगता है ।
जैसे – अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या – 4)
नोट :– (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – जिनके उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है – आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, औ (कुल संख्या – 7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है । स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।
जैसे – अ३, आ३, इ३, ई३, उ३, ऊ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३,

(2) उच्चारण के आधार पर :– (2 प्रकार है)

(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर आती है ।
नोट – अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।
जैसे – अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है।
बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।
जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर – (3 प्रकार है)

(i) अग्र स्वर :– उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।
जैसे – इ, ई, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।
जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ
पहचान :– निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने
अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार है ।

(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना।
जैसे :– उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना।
जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार है।

(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना।
जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा खुलना। जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत – उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना।
जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।

हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।

जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।

(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)

(ii) अंतः स्थ व्यंजन – (04)

(iii) ऊष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करने के बाद मुख से बाहर निकलती है तो वह स्पर्श व्यंजन कहलाती है ।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –

(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ्.

(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्

(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्

(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्

(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4 है ।

जैसे :– य् व् र् ल्

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।

कुल ऊष्म व्यंजन – 4 है।

जैसे – ष् श् स् ह्

संयुक्त व्यंजन – इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।

क्ष – क् + श

त्र – त् + र

ज्ञ – ज् + ञ

श्र – ष् + र

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार का है ।

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर

(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

i. कण्ठ स्थान – 'कण्ठ्य वर्ग'
सूत्र – अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः
अ, आ, क वर्ग (क,ख,ग,घ,ड.) ह, विसर्ग (अः)

ii. तालु स्थान – तालव्य वर्ग
सूत्र – इचुयशानां तालु
इ, ई, च वर्ग (च,छ,ज,झ,´) य, ष

iii. मूर्धा स्थान – मूर्धन्य वर्ण
सूत्र – ऋटुरशाणां मूर्धा
ऋ, ऋ ट वर्ग (ट,ठ,ड,ढ,ण) र, श

iv. दन्त स्थान – दन्त्य वर्ण
सूत्र – लृतुलसानां दन्ता
लृ, त वर्ग (त,थ,द,ध,न) ल, स

v. ओष्ठ स्थान – ओष्ठय वर्ण
सूत्र – उपूपध्यानीया ना मो श्ठौ
उ, ऊ, प वर्ग (प,फ,ब,भ,म)
उपध्मानीय वर्ण (ᳵप, ᳵफ)

vi. नासिका स्थान – नासिक्य वर्ण
सूत्र – नासिका अनुस्वास्य (अं)
ञमङणनानां नासिका च
(ङ् ञ ण न म्)

vii. दन्तोष्ठ स्थान – दन्तोष्ठय वर्ण
सूत्र – वकारस्य दन्तोष्ठम् – व

(2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –

(i) कंपन के आधार पर

(ii) श्वास वायु के आधार पर

(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कंपन के आधार पर – इसके आधार पर दो प्रकार के वर्ण होते है ।

a) अघोष वर्ण – प्रत्येक वर्ग का पहला + दूसरा वर्ण + ष,श,स+विसर्ग
अघोष वर्ण की ट्रिक – 1,2 बजते ही उश्मा में विसर्जन का अवघोष हो जाता है । प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण, उश्म वर्ण (ष,श,स) विसर्ग

b) घोष वर्ण – प्रत्येक वर्ग का 3,4,5 वर्ण + ड, ढ + य,र,ल,व,ह + सभी स्वर + अनुस्वार
घोष वर्ण कि ट्रिक – 3,4,5 की घुस लेते ही सभी स्वरों को ड ढ़ के साथ नियम अनुसार अंदर कर दिया।
प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण + सभी स्वर + ड़ ढ़ + अनुस्वार

(ii). श्वास वायु के आधार पर – मुख्यतः दो प्रकार के होते है ।

a) अल्पप्राण – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवा वर्ण + + ड़ र, ल, व + सभी स्वर
अल्प प्राण कि ट्रीक –अल्प आयु में 1,3,5 का अन्त हुआ व ड़ के साथ सभी स्वर्ग गये ।
अल्पप्राण में आने वाले व्यंजन – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण + अतःस्थ व्यंजन + ड़ सभी स्वर

b) महाप्राण – प्रत्येक वर्ग का 2,4 वर्ण + ढ + ष, श, स, ह
महाप्राण –महाम 2,4 घण्टे ढ़का रहने से उश्मा बढती है ।
महाप्राण में आने वाले वर्ण – प्रत्येक वर्ग का 2 व 4 वर्ण, + ऊष्म वर्ण (ष,श,स) + ह वर्ण

Unleash the topper in you

(iii). उच्चारण के आधार पर –

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते है ।

1) स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
2) स्पर्श संघर्षी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
3) संघर्षी व्यंजन (4) – ष, श, स, ह
4) नासिक व्यंजन (5) – ड., ´, ण, न, म
5) उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड, ढ
6) प्रकंपित व्यंजन (1) – र
7) पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
8) संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य (''वर्ण विचार'' से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

	समानाक्षर स्वर	**संधि स्वर**
(i)	आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii)	ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii)	ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क़ – क़रीब
ख़ – ख़ना
ग़ – ग़ाम
ज़ – ज़रा
फ़ – फ़न, फ़ाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (ɛ́)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान ''विप्रसाद सितारे हिंद'' को जाता है।
- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।
- वर्त्स वर्णो में न, स, ल को शामिल किया जाता है।
- उच्चारण स्थानों के अलावा शरीर के वे अंग जो उच्चारण करनें में सहायक हो करण कहलाते है। इसकी कुल संख्या चार होती है।
  (1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ)
  (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोड़ा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें का परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खड़ी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है।
  जैसे– विद्‌या, पाठ्‌य, अपराह्‌न, पट्‌टा आदि।

1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
4. ईशत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है।
5. ईशद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (ष, श, स, ह)
6. रक्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

नोट – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते है।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें।

स्वर	**व्यंजन**	**कुल**
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड., ढ. + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	क़ ख़ ग़ ज़ फ़ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्धा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड्डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।
  जैसे – पढाई, लडाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढना आदि।

रकार/रेफ या र संबंधित नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
- जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

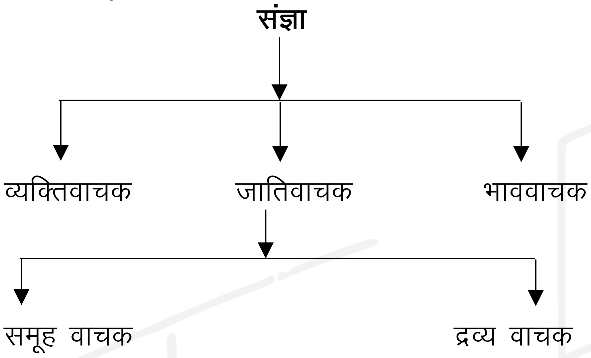

1.व्यक्तिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

- व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

2.जातिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3.भाववाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

- प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
  1. जातिवाचक संज्ञा से
  2. सर्वनाम से
  3. विशेषण से
  4. क्रिया से
  5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालाक	चालाकी
निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता

गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य/शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन/कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	**भाववाचक संज्ञा**
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	**भाववाचक संज्ञा**
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा –** ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।
2. **द्रव्य वाचक संज्ञा –** किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे – दूध, घी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, ऑक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।

नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।

सर दार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।

जैसे –

गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों

Unleash the topper in you

3 CHAPTER सर्वनाम

परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
  जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहनें वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है

पुरुषवाचक सर्वनाम

↓ उत्तम पुरुष ↓ मध्यम पुरुष ↓ अन्य पुरुष

(i) उत्तम पुरुष – बोलने वाला / लिखने वाला
जैसे – मैं, हम, हम सब।

(ii) मध्यम पुरुष – श्रोता/सुनने वाला
जैसे – तू, तुम, आप, आप सब।

(iii) अन्य पुरुष – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारें में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. निश्चय वाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
पास की वस्तु के लिए – यह
दूर की वस्तु के लिए – वह

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारें में निश्चतता का बोध नहीं होता हैं। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – कोई

- सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
  निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
- रमन को कोई बुला रहा है।
- दूध मे कुछ गिरा है।

4. संबंधवाचक सर्वनाम – दो उपवाक्यों के बीच आकर सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।
जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता हैं वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?
कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?

6. निजवाचक सर्वनाम – ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – आप, स्वयं, खुद।
जैसे – मैं अपने आप चला जाऊँगा।
सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।

(i) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।
(ii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।
(iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति में परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

Unleash the topper in you

4 CHAPTER विशेषण

परिभाषा
संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है।

जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है और जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है।

जैसे – छोटा जादूगर करतब दिखा रहा है ।
यहाँ छोटा शब्द विशेषण है तथा जादूगर विशेष्य (संज्ञा) है।

विशेष – विशेषण की पहचान का तरीका
किसी भी वाक्य में कैसा/कैसी/कैसे अथवा कितना/कितनी/कितने शब्दों से प्रश्न किये जाने पर इसके उत्तर के रूप में जो कोई भी शब्द लिखा जाता है। यह विशेषण माना जाता है।

जैसे –
(i) अंकित कैसा लडका है ?
उत्तर – अंकित अच्छा/बुरा/भला/शैतान/चंचल लडका है।
(ii) हरी तुम्हारे पास कितनी गायें है ?
उत्तर – मेरे पास पाँच/दस/सौ/हजारों गाये है।

विशेषण के भेद – विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते है।
1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेतवाचक (सार्वनामिक) विशेषण

1. गुणवाचक विषेषण
ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ के रंग, रूप, गुण, दोष, आकार, दशा, स्थिति, स्थान, काल, समय, आदि की विशेषता को प्रकट करते हैं, वहाँ गुणवाचक विशेषण माना जाता है।
जैसे – कृष्णमृग, सुन्दर बालिका, भले लोग, गंदी बस्ती, बड़ा लड़का, पुराना मकान आदि।

2. संख्यावाचक विषेषण
जो विशेषण शब्द किसी पदार्थ की संख्या को प्रकट करे। एक, दूसरी, चौगुनी, दोनों, शतक, दर्जनों, अनेक आदि।

3. परिमाण वाचक विषेषण
ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ में मात्रा को प्रकट करते है उनमें परिमाण वाचक विशेषण माना जाता है ।
जैसे – दो लीटर तेल, हजार टन गेहूँ, थोडा सा पानी

4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण
विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते है।

जैसे – (i) यह किताब मेरी है। (ii) वह लडका खाना खा रहा है। (iii) जो लोग मेहनत करते है वे अवश्य अपनी मंजिल पाते है।

विशेषण के अन्य भेद
(i) व्यक्तिवाचक विशेषण
(ii) भिन्नतावाचक विशेषण

विशेषण की अवस्थाएँ – 3 होती है।
(i) **मूलावस्था** – जो विशेषण शब्द अपने मूल रूप में लिखा जाता है।
जैसे – अतुल एक अच्छा लड़का है।

(ii) **उत्तरावस्था** – जब कोई विशेषण शब्द दो पदार्थो की तुलना करने के लिए प्रयुक्त होता है।
जैसे – (i) गंगा यमुना से पवित्र नदी है।
(ii) मानसी पटुतर लड़की है।

पहचान – जब किसी विशेषण शब्द से पहले 'से' शब्द लिखा हो अथवा विशेषण के बाद 'तर' प्रत्यय जुडा हो तो वहाँ उत्तरावस्था मानी जाती है।

(iii) **उत्तमावस्था** – जब कोई विशेषण शब्द अनेक पदार्थो में से किसी एक को चुनने में काम आता है, वहाँ उत्तमावस्था मानी जाती है।

पहचान – जब विषेशण शब्द से पहले सबसे शब्द या विशेषण के बाद तम/इष्टा/तरीन प्रत्यय लगा हो वहाँ उत्तमावस्था होगी।
जैसे – (i) स्नेहा कक्षा की पटुतम बालिका है।
(ii) नवीन सबसे अच्छा लडका है।
(iii) विद्यालय में व्यवस्थाएँ बेहतरीन है।

प्रविशेषण
ऐसे शब्द जो किसी विशेषण की भी विशेषता को प्रकट करते है, वे प्रविशेषण कहलाते है।
जैसे – (i) वह बहुत तेज दौड़ता है।
(ii) अवनी अत्यंत सुंदर बालिका है।

Unleash the topper in you

5 CHAPTER वाच्य

वाच्य का अर्थ है – बोलने का तरीका।

हिंदी में तीन प्रकार के वाच्य होते हैं– 1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

(1) कर्तृवाच्य

जिस वाक्य में बोलने का बिंदु कर्ता होता है, वहाँ कर्तृवाच्य होता है । कर्तृवाच्य में कर्ता को केंद्र में रखकर कथन किया जाता है ।

1. लड़का खाना खाता है । (लड़के के खाना खाने पर कहा गया है ।)
2. लड़की पुस्तक पढ़ेगी । (लड़की के पुस्तक पढ़ने के बारे में बताया गया है।)

कर्तृवाच्य में क्रिया रूप

कर्तृवाच्य वाक्य दो प्रकार का होता है–

(i) क्रिया कर्ता के अनुसार आती है अर्थात् क्रिया का लिंग, वचन कर्ता के अनुसार होता है जैसे–
- सुनीता आम खाती है । (कर्ता स्त्रीलिंग तो क्रिया भी स्त्रीलिंग)
- मनीष खीर खाता है । (कर्ता–पुल्लिंग तो क्रिया भी पुल्लिंग)

(ii) क्रिया कर्म के अनुसार–भूतकाल में सकर्मक क्रिया होने पर कर्ता के आगे 'ने' कारक चिह्न लगता है और क्रिया कर्ता के अनुसार न आकर कर्म के लिंग–वचन के अनुसार आती है जैसे–
- सुनीता ने आम खाया। (कर्ता स्त्रीलिंग किंतु कर्म (आम) पुल्लिंग, इसलिए क्रिया भी पुल्लिंग है ।
- विवेक ने खीर खाई । (कर्ता पुल्लिंग किन्तु कर्म (खीर) स्त्रीलिंग इसलिए क्रिया भी स्त्रीलिंग है ।)

कर्तृवाच्य में क्रियाएँ

कर्तृवाच्य में क्रिया अकर्मक भी हो सकती है और सकर्मक भी हो सकती है ।

- पुनीत दौड़ता है । (अकर्मक क्रिया)
- पुनीत पुस्तक पढ़ता है । (सकर्मक क्रिया)

(2) कर्मवाच्य

जिस वाक्य में कहने का बिंदु कर्ता न होकर कर्म होता है वहाँ कर्मवाच्य होता है, अर्थात् कर्म को केंद्र में रखकर कथन किया जाता है । जैसे–

- खाना लडके द्वारा खाया जाता है । (खाना–कर्म को केन्द्र में रखकर कथन किया गया है ।)
- पुस्तक लड़के द्वारा पढ़ी जाएगी । (पुस्तक–कर्म को केन्द्र में रखकर किया गया है ।)

कर्मवाच्य वाक्य की पहचान

(i) वाक्य में क्रिया का कर्ता कर्ताकारक में न रहकर करण कारक बन जाता है और कर्ता के आगे करण कारक का कारक –चिह्न से या के द्वारा लग जाता है।

(ii) क्रिया कर्म के अनुसार आती है।
लड़के द्वारा पुस्तक पढ़ी गई। इस वाक्य में पुस्तक को पढ़नेवाला लड़का तो कर्ण कारक में है, उसके आगे 'के द्वारा' कारक–चिह्न लगा हुआ है तथा क्रिया कर्ता के लिंग–वचन के अनुसार न आकर कर्म के लिंग–वचन के अनुसार रही है इसे 'कर्मवाच्य कर्मणि प्रयोग' कहा जाता है।
पुस्तक (स्त्रीलिंग) पढ़ी गई (स्त्रीलिंग)
– लड़की द्वारा पत्र पढ़ा गया ।
पत्र (पुल्लिंग) पढ़ा गया (पुल्लिंग)

(iii) कर्मवाच्य में क्रिया सकर्मक ही होती है, अकर्मक नहीं। अकर्मक क्रिया या वो कर्तृवाच्य में होती है या भाववाच्य में।

(iv) कर्मवाच्य में भी यदि कर्म के आगे कोई कारक–चिह्न आ गया तो क्रिया न कर्ता के अनुसार आएगी, न कर्म के अनुसार बल्कि एकवचन पुल्लिंग में क्रिया आती है, इसे 'कर्मवाच्य भावे प्रयोग' कहा जाता है।
- लड़की ने खीर को रख लिया है।
- लड़के ने आम को खा लिया है।

यहाँ 'को' कारक चिह्न के लग जाने से क्रिया– 'खा लिया है' एकवचन पुल्लिंग रूप में है । चाहे कर्ता पुल्लिंग (लड़का) हो या स्त्रीलिंग (लड़की) और चाहे कर्म पुल्लिंग (आम) हो चाहे स्त्रीलिंग (खीर) ।

(3) भाववाच्य

जिस वाक्य में कहने का केंद्रीय विषय न कर्ता होता है और न कर्म बल्कि भाव विशेष होता है, वहाँ भाववाच्य होता है । जैसे–

1. मुझसे चला नहीं जाता। (चले नहीं जाने की असमर्थता के भाव को केंद्र में रखकर कथन किया गया है।)
2. अब तो मरीज से चला जाता है । (मरीज द्वारा चल पाने की सामर्थ्य के भाव को लेकर कथन है।)

भाववाच्य की पहचान

(i) कर्ता करण कारक में होता है । (मरीज से)

(ii) वाक्य में कर्म होता ही नहीं, क्रिया अकर्मक रूप की ही होती है।

(iii) क्रिया हमेशा एकवचन पुल्लिंग में होती है । (चला नहीं जाता)

(iv) सामान्यतः भाववाच्य किसी क्रिया के न कर सकने के अर्थात् असमर्थता के भाव को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है, (चला नहीं जाता, पढ़ा नहीं जाता आदि) किंतु सकारात्मक अर्थ में भी भाववाच्य हो सकता है, जैसे –

- अब तो मरीज से बोला जाता है।
- लडके से दौड़ा जाता है।
- लडकी से दौड़ा जाता है।
- रमा से खडा हुआ नहीं जाता।

वाच्य और प्रयोग

सामान्यतः कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के अनुसार, कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है और भाववाच्य में क्रिया न तो कर्ता के अनुसार होती है और न ही कर्म के अनुसार बल्कि क्रिया भाव के अनुसार होने के कारण अन्यपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में होती रहती है किंतु कर्तृवाच्य में भी क्रिया, कर्ता–कर्म एवं भाव तीनों के अनुसार हो सकती है, जिसे हिंदी व्याकरण में 'भावे प्रयोग' कहा जाता है । प्रयोग तीन प्रकार के होते हैं–
कर्तरि प्रयोग, कर्मणि प्रयोग और भावे प्रयोग।

(क) कर्तृवाच्य

1. **कर्तृवाच्य–कर्तरि प्रयोग–** इसमे क्रिया कर्ता के अनुसार होती है।
   - लड़का पुस्तक पढ़ता है। (कर्तृवाच्य कर्तरि प्रयोग)
   - लड़की पुस्तक पढ़ती है। (कर्तृवाच्य कर्तरि प्रयोग)
2. **कर्तृवाच्य–कर्मणि प्रयोग–** इसमें क्रिया कर्म के अनुसार होती है।
   - लड़के ने पुस्तक पढ़ी। (कर्तृवाच्य कर्मणि प्रयोग) भूतकाल में सकर्मक क्रिया होने पर कर्ता के आगे 'ने' कारक–चिह्न लगता है तथा क्रिया कर्ता के अनुसार न आकर कर्म स्त्रीलिंग (पुस्तक) के अनुसार आती है।
   - **लड़की ने पत्र पढ़ा। इसमें भी कर्तृवाच्य कर्मणि प्रयोग है।**
3. **कर्तृवाच्य–भावे प्रयोग–** कर्तृवाच्य भावे प्रयोग में वाच्य तो कर्तृ होता है किंतु क्रिया सदैव भावे रूप अर्थात् **एकवचन पुल्लिंग में होती है; जैसे–**
   - **लड़के ने पुस्तक को पढ़ा ।**
   - **माँ ने बच्चे को खिलाया ।**

इन दोनों वाक्यों में कर्तृवाच्य है क्योंकि कर्ता के आगे 'ने' कारक–चिह्न लगा हुआ है । पहले वाक्य में पुस्तक एवं दूसरे वाक्य इसे कर्तृवाच्य कर्मणि–प्रयोग कहते हैं । इसी तरह बच्चा कर्म भी है किंतु इनके आगे कर्मकारक का 'को' कारक–चिह्न लगा हुआ है । इस कारक–चिह्न के लगने से अब किया कर्म के अनुसार ही अपना रूप नहीं लेती बल्कि अब वह भाववाच्य की तरह एकवचन, पुल्लिंग का ही रूप लेती है– 'पढा', 'खिलाया'; इसे क्रिया का भावे प्रयोग कहते है ।

(ख) कर्मवाच्य

1. **कर्तृवाच्य कर्मणि प्रयोग**
   कर्म वाच्य में सामान्यतः क्रिया कर्म के अनुसार आती है; जैसे–
   - पुस्तक लडके द्वारा पढी जाती है । (कर्मवाच्य कर्मणि प्रयोग) यहॉ वाक्य कर्मवाच्य है तथा क्रिया भी कर्म के अनुसार आ रही है ।
   - पत्र लड़की द्वारा पढा जाता है । (कर्मवाच्य कर्मणि प्रयोग)
2. **कर्मवाच्य भावे प्रयोग**
   कर्मवाच्य में क्रिया भाव वाच्य की तरह एकवचन पुल्लिंग में भी हो सकती है, उसे कर्मवाच्य भावे प्रयोग कहते है।
   - लडके द्वारा पुस्तक को पढा गया।
   - लडकी द्वारा पत्र को पढा गया।

कर्म के बाद 'को' कारक–चिह्न लगने के कारण क्रिया कर्म के अनुसार न आकर भावे प्रयोग की तरह एकवचन पुल्लिंग में ही रहती है, यही कर्मवाच्य भावे प्रयोग है ।

(ग) भाववाच्य

1. **भाववाच्य भाव प्रयोग**
   भाववाच्य में तो क्रिया का सदैव भावे प्रयोग ही होता है– एकवचन पुल्लिंग।
   - पक्षियों से उडा नहीं जाता।
   - चिडिया से उडा नहीं जाता।
   - कबूतर से उडा जाता है।

6 CHAPTER

कारक एवं विभक्ति

कारक

- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकाशित हो सकता है, उसी रूप को कारक कहते हैं।
- हिन्दी में कारक मुख्य रूप से 8 प्रकार के होते हैं।
- कारकों का विभक्ति सहित परिचय निम्न है–

कारक	विभक्ति चिह्न	वाक्य प्रयोग
1. कर्ता	ने	राजू ने पत्र लिखा। राजू पत्र लिखता है।
2. कर्म	को	राम पुस्तक पढ़ता है। राम ने रावण को मारा।
3. करण	से, के द्वारा	श्याम ने कलम से पत्र लिखा। श्याम के द्वारा कलम से पत्र लिखा गया।
4. संप्रदान	को, के लिए	राज को पुस्तक दे दो। सरला के लिए सामान मँगवाओं।
5. अपादान	से (पृथकता)	पेड़ से पत्ता गिरा। घोड़े पर से राज गिरा।
6. संबंध	का, के, की, रा, रे, री	यह पुस्तक राम की है। मेरी पुस्तक है। मेरे पिताजी है।
7. अधिकरण	में, पर	छत पर मत जाओ। नदी में तैरो।
8. संबोधन	हे! अरे! ओ	हे राम! हम पर कृपा करो। ओ मूर्ख! ठहर जाओ।

1. कर्ता कारक

कर्ता का अर्थ करने वाला होता है। वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने का बोध होता है, उसे कर्ता कहते हैं।

उदाहरण – बच्चे खेलते हैं।
राज जयपुर जाता हैं।
मानसी नृत्य करती है।
पूजा ने चित्र देखे।

नोट –

- कर्ता कारक प्रायः कभी–कभी विभक्ति रहित होते हैं व कभी विभक्ति सहित होते हैं। जब कर्ता विभक्ति रहित हो तब 'कौन' लगाकर प्रश्न करें – जो पद उत्तर में होगा वो ही कर्ता होगा।
  जैसे –
  छात्र पुस्तक पढ़ते हैं – कौन पढ़ते हैं – छात्र।
- कभी–कभी कर्ता के साथ 'ने' चिह्न ना आकार कर्ता संज्ञा या सर्वनाम के साथ अन्य चिह्न भी आते हैं।
  जैसे – 'को'
  राज को कल क्रिकेट खेलना हैं।
- कभी–कभी कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' इत्यादि करण कारक के विभक्ति चिह्न जुड़ें होने पर भी कर्मवाच्य व भाववाच्य पदों में कर्ता कारक माना जाएगा।
  (i) दादाजी से चला नहीं जाता है। (भाववाच्य)
  (ii) राम के द्वारा लिखा जाता है।
- कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में नकारात्मक वाक्यों के साथ 'से' का प्रयोग होता है व सकारात्मक वाक्यों के साथ 'के द्वारा' का प्रयोग होता है।
  जैसे – राज के द्वारा क्रिकेट खेला गया।
  विमला से पुस्तक नहीं पढ़ी गई।

2. कर्म कारक

कर्ता जहाँ पर सर्वाधिक जोर देता है या सर्वाधिक चाहता है, उसे कर्मकारक कहते हैं अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप पर क्रिया का फल पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं।

उदाहरण –
(i) राम ने रावण को मारा।
(ii) राधा पुस्तक पढ़ती है।
(iii) भारत की क्रिकेट टीम ने पाकिस्तान क्रिकेट टीम को रौंद डाला।

नोट –

- कर्मकारक भी विभक्ति सहित व रहित दोनों रूपों में प्रयुक्त होता है।
- कर्म जब 'प्राणीवाचक' हो तब 'को' जुड़ेगा व कर्म 'अप्राणीवाचक' हुआ तो 'को' का प्रयोग नहीं होता हैं।
  जैसे – राज अतुल को पढ़ाता है।
  मोर नाच दिखाता है।
- दोनों ओर, चारों ओर, की ओर जहाँ होते है वहाँ पर कर्म कारक होता हैं।

जैसे – विद्यालय के दोनों ओर पेड़ हैं।
मैदान के चारों ओर बच्चे दौड़ रहे थे।
राधा मन्दिर की ओर जा रही थी।

- निकट, पास, दूर, वार, तिथि व समय प्रकट करने वाले शब्दों में कर्मकारक होता हैं।
  जैसे – विद्यालय के पास मन्दिर है।
  तुम मंगलवार को आगरा चले जाना।

3. करण कारक

वाक्य में जिस साधन के माध्यम से क्रिया का व्यापार सम्पादन हो उसे कर्म कारक कहते हैं।

उदाहरण –

- मैं आपको आँखों देखी घटना बता रहा हूँ।
- छात्रों को पत्र से परीक्षा की सूचना मिली।
- आज भी संसार में लाखों पशु अकाल से मर रहे हैं।
- कानों सुनी बात हमेशा सत्य होती है।

विशेष

(i) जहाँ पर समानता का भाव प्रकट हो वहाँ करण कारक होता है।
उदाहरण – राज के समान अतुल भी मूर्ख है।

(ii) जिस चिह्न से किसी व्यक्ति या वस्तु की पहचान हो वहाँ करण कारक होता है।
उदाहरण –
वह काले कोट से वकील लगता है।
वह कमण्डलु से साधु प्रतीत होता है।

(iii) जिसके साथ में हो, उस शब्द में करण कारक होता है।
उदाहरण –
राज के साथ श्याम विद्यालय गया था।
सीता राम के साथ वन गई।

4. सम्प्रदान कारक

जिस प्राणी या वस्तु के हित के लिए क्रिया व्यापार का सम्पादन किया जाता है उसे सम्प्रदान कारक कहा जाता है।

उदाहरण –

- क्रिकेटर महेन्द्र सिंह धोनी ने गरीब लोगों के लिए अनाज और कपड़ें बँटवाए।
- राजा ने भिखारी को वस्त्र दिए।
- राम के हित लक्ष्मण भी वन गए थे।

विशेष

- जहाँ पर वस्तु पूर्ण रूप से दे दी गई हो वहाँ सम्प्रदान कारक होता है बल्कि वस्तु को पुनः लेने का भाव हो वहाँ पर कर्म कारक होता है।
  जैसे – अनिल ने धोबी को वस्त्र दिए।
- जहाँ पर कोई रूची का भाव प्रकट हो वहाँ पर सम्प्रदान कारक होता है।
  जैसे – राम को खीर अच्छी लगती है।
- जहाँ अभिवादन, कल्याण, कामना, कहना या निवेदन करने के योग में सम्प्रदान कारक होता है।
  जैसे – छात्रों का कल्याण हो।
  राम अपने पिताजी से निवेदन कर रहा था।
  बड़ों को नमस्कार।

5. अपादान कारक

अपादान अलग होने का भाव प्रकट करता है अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने का भाव प्रकट हो उसे अपादान कारक कहते हैं।

उदाहरण –

- राज घोड़े से गिर गया।
- गंगा हिमालय से निकलती है।
- किसान फसल से पशुओं को हटाता है।

विशेष

प्रेम, घृणा, लज्जा, ईर्ष्या, भय, तुलना, सीखने के अर्थ में भी अपादान कारक होता हैं।

जैसे –

- राज को गंदगी से घृणा है।
- हिरण शेर से बहुत डरता है।
- राजू अपने पिताजी से बहुत लजाता है।
- छात्र अध्यापक से शिक्षा लेते हैं।
- सरोज गाड़ी से जयपुर गयी। (करण)
- सरोज गाड़ी से गिर गयी। (अपादान)
- वह विद्यालय से आया। (अपादान)
- वह जीप से आया। (करण)

6. संबंध कारक

वाक्य के जिस पद से किसी वस्तु व्यक्ति या पदार्थ का दूसरे व्यक्ति वस्तु या पदार्थ से संबंध प्रकट हो उसे संबंध कारक कहते है।

उदाहरण –

- राजकुमार मदन का पुत्र है।
- यह राधा की पुस्तक है।
- लड़कें के कपड़े कहाँ पर हैं ?

विशेष

- संबंध कारक के परसर्ग में, रा, रे, री, का, के, ना, ने, अवस्था, निश्चय, लक्षण, शीघ्रता, लोकोक्तियों में समय, मूल्य, परिणाम आदि में संबंध कारक का प्रयोग किया जाता हैं।
  उदाहरण –
  - दस रुपये की थाली।
  - राजा का रंक।
  - आज भी दूध का दूध और पानी का पानी होता हैं।
  - सब के सब चले गये रह गये बस आप।
  - राई का पहाड़।
  - मेरी पुस्तक कहाँ है ?
  - मोहन के कपड़े कहाँ हैं ?
  - यह कृष्ण का घर है।

7. अधिकरण कारक

क्रिया होने के स्थान और काल को बताने वाला कारक अधिकरण कारक कहलाता है अर्थात् वाक्य में क्रिया का आधार आश्रय, समय या शर्त का कार्य करने वाला संज्ञा पद अधिकरण कारक कहलाता हैं।

अधिकरण कारक की विभक्तियाँ

के ऊपर, के में, पर, अंदर, के बीच, के मध्य, के भीतर आदि।

उदाहरण –

- मोर छत पर नाच रहा है।
- राम पेड़ पर बैठा है।
- माऊण्ट आबू पर चढ़ना आसान नहीं है।
- वह द्वार – द्वार भीख माँगता फिरता है।
- माता पुत्री से स्नेह करती है।

विशेष

जहाँ किसी को बहुतों में अच्छा या बुरा बतलाया जाए या जिससे तुलना की जाए, समयावधि सूचित करने में अधिकरण कारक होता हैं।

उदाहरण –

- छात्रों में मुकेश समझदार है।
- अशोक ने पाँच दिनों में सारा काम कर लिया।
- अशोक आज तुम्हारे घर सोना बरसेगा।

8. सम्बोधन कारक

- जिस संज्ञा पद से किसी को पुकारने, सावधान करने अथवा सम्बोधित करने का बोध हो सम्बोधन कारक कहलाता है।
- सम्बोधन प्रायः कर्ता का ही होता है –
  हे भगवान! अब क्या होगा।
  बच्चो! घर जाओ।
  अरे राज! तु वहाँ क्या कर रहा है।
  ओ अतुल! जरा इधर तो आना।

विशेष

- सर्वनाम शब्दों में कभी सम्बोधन नहीं होता है। कई बार नाम पर जोर देकर सम्बोधन का काम चला लिया जाता है।
  जैसे – अशोक जल्दी चलो।
- कभी–कभी सम्बोधन शब्द संज्ञा के साथ नहीं आते हैं जबकि अकेले ही प्रयुक्त होते हैं।
  जैसे – अरे, इधर आओ।
- संज्ञा शब्दों के पूर्व कभी–कभी अव्यय शब्दों का भी प्रयोग होता हैं।
- सम्बोधन कारक के चिह्न सम्बोधन संज्ञा से पूर्व आते हैं–
  संबोधित ईकारान्त, ऊकारान्त संज्ञा, संबोधन के समय ह्रस्व हो जाती हैं।
  हे पृथ्वी! हे नदी! अभि सुंदरी!
  हे स्वामी! हे दामिनी! हे वधू!
  हे सीते! इत्यादि

विभक्ति

- वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम को कर्ता, कर्म, करण आदि में विभक्त करने वाले शब्द चिह्न जो कारकों का रूप प्रकट करने के लिए कारकों के साथ लगते हैं विभक्ति कहलाती हैं।
- विभक्ति दो प्रकार की होती है–
  1. संश्लिष्ट विभक्ति
  2. विश्लिष्ट विभक्ति

संश्लिष्ट विभक्ति

जो विभक्तियाँ सर्वनाम शब्दों के साथ उनकी शिरोरेखा से मिलाकर लिखी जाती है उसे संश्लिष्ट विभक्ति कहते हैं। जैसे – आपका, आपने, मैंनें, मुझको, उसका, उसमें, इसमें, इसने, उसको आदि।

विश्लिष्ट विभक्ति

ऐसी विभक्तियाँ जो संज्ञा नाम से अलग लिखी जाती हैं उन्हें विश्लिष्ट विभक्ति कहते हैं–
दीपक ने, महेश को, देवेन्द्र से, प्रमोद के लिए, राधा को कृष्ण से, सेना में, छत पर, मोहन ने।

कारक	विभक्ति	वाक्य प्रयोग
कर्ता	ने	देव ने पत्र लिखा।
कर्म	को	देव पुस्तक पढ़ता है।
करण	से, के द्वारा	राज ने कलम से पत्र लिखा।
संप्रदान	को, के लिए	भिखारी को आटा दे दो।
अपादान	से, (पृथकता)	पेड़ से पत्ता गिरा।
संबंध	का, के, की, रा, रे री	यह घर राम का है।
अधिकरण	में, पर	नदी में तैरो।
संबोधन	हे, अरे, ओ	हे देव! हम पर कृपा करो।

Unleash the topper in you